B.A. (Part-III) Examination, 2019

हिन्दी साहित्य-तृतीय वर्ष (द्वितीय प्रश्न-पत्र)

(निबन्ध तथा काव्यशास्त्र)

For Collegiate Candidates

Time allowed : Three Hours Maximum marks : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:-

(क) काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ ही साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत कुछ असर पैदा कर देता है। वाल्मीकि ने जिन-जिन बातों को अवगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचन्द्र में बरकाया था वे ही सब व्यास के समय मे गुण हो गई जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान, अपना गौरव, अपना प्रभुत्व जहाँ तक हो सके न जाने पावे। भारत के हर एक प्रसंग का तोड़ अंत में इसी बात पर है। 10

अथवा

मनुष्य ने जो कर्म किया है, उसे संचित कर्म कहते हैं। जिस पुराने कर्म के फल को वह भोग रहा है, उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं। जो कुछ वह नये सिरे से करने जा रहा है, उसे क्रियमाण कर्म कहते हैं। ज्ञान होने पर संचित कर्म तो नष्ट हो जाते हैं, पर प्रारब्ध कर्म को भोगना ही पड़ता है। ज्ञान की अग्नि से संचित कर्म जलकर दग्ध बीज की तरह निष्फल हो जाते हैं और ज्ञानी प्रारब्ध कर्मों के संस्कार-वश उसी प्रकार शरीर धारण किए रहता है, जैसे कुम्हार का चलाया हुआ चक्र दण्ड उठा लेने पर वेगवश कुछ देर चलता रहता है। 10

(ख) जिस प्रकार मध्ययुग का जीवन भक्ति काव्य में व्यस्त हुआ है, उसी प्रकार आधुनिक जीवन की अभिव्यक्ति इस काव्य में हो रही है। अन्तर है तो इतना कि जहाँ पूर्ववर्ती भक्ति-काव्य में जीवन के लौकिक और व्यावहारिक पहलुओं को गौण स्थान देकर उसकी उपेक्षा की गयी थी, वहाँ छायावादी काव्य प्राकृतिक सौन्दर्य और सामयिक जीवन-परिस्थितियों से ही मुख्यत: अनुप्राणित है। इस दृष्टि से वह पूर्ववर्ती भक्ति-काव्य की प्रकृति-निरपेक्षता और संसार मिथ्या की सैद्धान्तिक प्रक्रियाओं का विरोधी भी है। 10

अथवा

सन्त-साहित्य की प्रबल धारा ने समाज के ऐसे स्तरों को जगाया, जो सबसे पीड़ित थे और संस्कृति से वंचित थे। अछूत और नीच कहलाने वालों में संतों का जन्म हुआ। इन सब लोगों के लिए न मंदिर में जगह थी, न मस्जिद में। इनका निर्गुणवाद मंदिर-मस्जिद, वेद, पुराण और कुरान के विरुद्ध चुनौती बनकर आया है। वे मंदिर-मस्जिद की सीमाएँ नहीं मानते। भले ही इनका द्वार उनके लिए बन्द हो, वह अपने हृदय में साहब का दर्शन कर लेते हैं। 10

(ग) राम भीगें तो भीगें, राम के उत्कर्ष की कल्पना न भीगें, वह हर बारिश में, हर दुर्दिन में सुरक्षित रहे। नर के रूप में लीला करने वाले नारायण निर्वासन की व्यथा झेलें, पर नर रूप में उनकी ईश्वरता का बोध दमकता रहे, पानी की बूँदों की झालर में उसकी दीप्ति छिपने न पाए। उस नारायण की सुख-सेज बने अनंत के अवतार लक्ष्मण भले ही भीगते रहें, उनका दुपट्टा, उनका अहर्निश जागर न भीजे, शेषी नारायण के ऐश्वर्य का गौरव अनंत शेष के जागर-संकल्प से ही सुरक्षित हो सकेगा और इन दोनों का गौरव जगज्जनी आद्याशक्ति के अखण्ड सौभाग्य, सीमंत सिन्दूर से रक्षित हो सकेगा। 10

अथवा

मेरे जीवन में देवता तो प्रायः तृषित ही रह गये, परन्तु मन के रसातल में भैंसे की तरह मँड़िया मारते हुए असुरों ने छककर रस वारुणी का पान किया है और लगातार करते जा रहे हैं। अर्थात् इन असुरों की पुष्टि-तुष्टि के लिए ही मेरा जन्म हुआ है। अतः मेरे जन्म को धिक्कार, मुझे बार-बार धिक्कार! लेकिन इस आत्म-धिक्कार के बावजूद में अपनी समसामयिकों की नकल में बसन्त के भीतर विद्रोह की भाषा, प्रतिवाद की भाषा ढूँढ़ने नहीं जाता क्योंकि ऐसा करना सत्य और विश्वचेतना को अस्वीकार करना होगा और अस्वीकृति की यह विदूषक-मुद्रा मुझसे धारण नहीं की जाएगी। 10

(घ) कालीन पर चलते हुए काँटा चुभने का दर्द बड़ा होता है। मैं अभी तक कालीन पर चल रहा था। रोज नरसीसम जैसी आत्म-रति से आईना देखता था, घुँघराले काले केशों को देखकर, सहलाकर, सँवारकर, प्रसन्न होता था। उम्र को ठेलता जाता था, वार्द्धक्य को अँगूठा दिखाता था। पर आज कान में यह सफेद बाल फुसफुसा उठा, "भाई मेरे, एक बात 'कानफिडेन्स' में कहूँ-अपनी दुकान समेटना अब शुरू कर दो।" 10

अथवा

यदि निर्वासित मनुष्य की कला स्वयं उसकी स्वतंत्र मेधा से निर्वासित हो गई हो, तो वह मनुष्य को अपनी स्वाधीनता से कैसे अवगत करा पाएगी ? यह नहीं कि कला से हमें प्रकाश ही प्राप्त हो, किन्तु हम अपने अंधेरे से परिचित हो सकें-यह वही कलाकृति कर सकती है जो स्वयं प्रकाश और अंधेरे के बीच भंडराती छलनाओं से परिचित हो।

'क्रोध' नामक निबन्ध का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिये। 15

अथवा

'भारतीय साहित्य की प्राण-शक्ति' निबन्ध में व्यक्त आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचारों पर प्रकाश डालिये। 15

3. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध में पं. विद्यानिवास मिश्र ने पौराणिक-सांस्कृतिक पात्र राम के माध्यम से वर्तमान जीवन व उसमें आए पीढ़ीगत वैचारिक बदलाव की व्याख्या की है। इस कथन की समीक्षा कीजिये। 15

अथवा

निर्मल वर्मा कृत 'साहित्य में प्रासंगिकता का प्रश्न' निबन्ध का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिये। 15

4. रस की परिभाषा बताते हुए उसके स्वरूप पर विस्तार से वर्णन कीजिये। 15

अथवा

अलंकार की परिभाषा बताते हुए काव्य में उसके महत्त्व व उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डालिये।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी कीजिए- 7½×2

(i) काव्य-गुण

(ii) शब्द-शक्तियों का काव्य में महत्त्व

(iii) छन्द की परिभाषा एवं स्वरूप तथा महत्त्व

(iv) छप्पय व द्रुतविलम्बित छन्द की सोदाहरण व्याख्या